जंग-ए-आज़ादी के महासमर में हिमाचल

✍ श्रीनिवास श्रीकांत

वर्तमान हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्र सुदूर अतीत में हिमालय के तापस क्षेत्र रहे हैं। पैदल व्यापार की दृष्टि से भी दक्षिण-एशिया का यह इलाका विश्व के वणिज्मान चित्र पर एक महत्वपूर्ण प्रान्त रहा है। मध्य एशिया, मंगोलिया, चीन तथा तिब्बत के साथ यहां सीमान्त वाणिज्य शताब्दियों तक होता रहा है। विश्व विख्यात सिल्क रूट इसी क्षेत्र में पड़ता है। इस क्षेत्र के माध्यम से न केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार होता रहा अपितु धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी यह क्षेत्र हमारे इतिहास में संवेदनशील रहा है। आज हम देख सकते हैं कि इस राज्य के उत्तरवर्ती सीमान्त इलाकों में बौद्ध धर्म के प्राचीन स्मारक मौजूद हैं तथा पारम्परिक व्यापारिक व सांस्कृतिक मेले हर वर्ष मनाए जाते हैं।

हिमाचल के इस बाह्य/मध्य हिमालय तथा निम्न पर्वतांचलिक शिवालिक क्षेत्र को विदेश से आये यात्रियों एवं अनुसंधायकों ने भी टटोला है। नस्ली आतताइयों को भी समय-समय पर दिग्विजय के लिए अपप्रेरित किया है लेकिन कठिन भौगोलिक स्थलीयता और उग्र जलवायु के कारण वे यहां अपना अधिपत्य नहीं जमा पाए।

अंग्रेजी राज के समय में हम आधुनिक हिमाचल को दो हिस्सों में देख सकते हैं– शिमला हिल्ज़ का पूर्वोत्तरी हिस्सा तथा तत्कालीन पंजाब का पश्चिमोत्तरी भाग। पूर्व में महासू, सिरमौर, चम्बा, बिलासपुर, मण्डी तथा निम्न शिवालिक पट्टी के इलाके और पश्चिम में कांगड़ा, ऊना, कुल्लू और लाहौल स्पीति के निम्न एवं मध्यवर्ती हिमालय के क्षेत्र। इन दोनों इलाकों में छोटी-छोटी सामन्तशाहियां थीं। कुछ राणा शाहियां तो कुछ ठकुराइयां। मध्य और उत्तर मध्यकाल में विभिन्न भारतीय राजवंशों ने भी यहां अपनी रियासतें बनायीं।

प्राचीन काल में शत्रुघ्न, कटोच, सेन बर्मन, तोमर, औदुम्बर, त्रिगर्त इत्यादि के प्रसिद्ध राजाओं ने यहां राज्य किया जिनमें से कुछेक का ज़िक्र हमें पौराणिक–खासकर भागवत पुराण में भी मिलता है। अंग्रेज़ों समेत गत राजस्व रिकार्ड के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी में यहां लगभग पचास एक राणा एवं ठाकुरशाहियां तथा बड़ी ज़मीदारियां रहीं होंगी।

महाराजा रणजीत सिंह पश्चिमी रियासतों को पंजाब के अपने क्षेत्र में शामिल करना चाहते थे। कुछेक राजाओं को मुआवज़ा देकर अथवा उनसे भारी भरकम नज़राना लेकर उन्होंने अपने समय में हिमाचल के इन इलाकों को अपने नियंत्रण में कर भी लिया था लेकिन उनकी मृत्यु के बाद सिख फौजों द्वारा इनके अभिग्रहण के कारण पश्चिमी और पूर्वी रियासतों के कुछेक सामंत अंग्रेज़ों से मिल गए थे। अंग्रेज़ी हुकमरानों ने शिमला हिल्ज़ की रियासतों की लीक पर ही मण्डी, सुकेत और तत्कालीन चम्बा पर अपना अधिकार कर लिया तथा सामन्ती विद्रोह के कारण कुल्लू, लाहौल- स्पीति, कांगड़ा, जसवां, गुलेर, नूरपुर, दातारपुर, हरिपुर और कोटला को जबरन अपने उपनिवेशी साम्राज्य का हिस्सा बना लिया। अपमानित राजाओं व ठाकुरों को अपनी छोटी सी जागीर अथवा नाममात्र के मुआवज़े से ही सन्तोष कर लेना पड़ा। अंग्रेज़ी शासन ने 1849 में कांगड़ा एवं अन्य पर्वतीय सामन्तशाहियों में अपना एक अलग प्रशासन लागू किया था। कांगड़ा विद्रोह के बाद कुल्लू और लाहौल-स्पीति समेत पूरे इलाके को एक जिलाधीश तथा मण्डी, सुकेत, बिलासपुर, चम्बा इत्यादि को एक अधीक्षक के अंतर्गत रख दिया गया। शेष रियासतों में एक अलग की नियुक्ति हो चुकी थी। पर्वतीय क्षेत्रों के प्रशासन को सुचारू रूप से संभालने के लिए अंग्रेज़ों ने तत्कालीन भूगोल और राजस्व की अपेक्षाओं को सामने रखा था। सिखों को पराजित करने के बाद उन्होंने कांगड़ा, नूरपुर, जतोग, डगशाई, कसौली एवं सुबाथू जैसे स्थलों पर सामरिक दृष्टि से छावनियां भी स्थापित की थीं। इन छावनियों द्वारा न केवल शासकों, उनके राजकाज और गतिविधियों पर नज़र रखी जाती थी। अपितु आम आदमी की भी निगरानी की जाती थी ताकि ब्रिटिश अनुशासन के विरुद्ध सिर उठाने वाले उग्रवादियों पर अंकुश लगाया जा सके।

अठारह सौ सत्तावन की मेरठ घटना और उसके बाद की परिस्थितियों का प्रभाव हिमाचल प्रदेश के जनमानस पर भी पड़ा क्योंकि अंग्रेज़ों द्वारा दमन के कारण वह एकाधिक स्तरों पर अपनी दासता से मुक्त होने के लिए अन्दर ही अन्दर छटपटा भी रहा था। मंगल पाण्डे की शहादत ने उन्हें

प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानियों का एक दुर्लभ चित्र

यह भी जताया कि वे महज़ गुलाम ही नहीं, उनकी धर्म, संस्कृति और जातीय मर्यादा भी दांव पर है। स्वतंत्रता पाने के राजनीतिक कारण ने जहां पुराने शासक वर्ग को प्रभावित किया था, वहीं हिमाचल की अंग्रेज़ छावनियों में भारतीय सैनिक भी कहीं अन्दर ही अन्दर आक्रोश से आप्लावित थे। असंतोष का पहला लक्षण कसौली छावनी में नज़र आया जो कि ब्रिटिश सेना का एक संवेदनशील नाभिकेन्द्र था। डगशाई, सुबाथू, जतोग, कांगड़ा, नूरपुर, धर्मशाला और रियासत सिरमौर में भी इसके संकेत दिखायी दिए। क्रांति की आंच शिमला तक पहुंच गयी थी। फौजियों ने भी विद्रोह कर दिया था। सूबेदार भीम सिंह के नेतृत्व में तत्कालीन अंग्रेज़ों की ग्रीष्मकालीन राजधानी में लगभग एक हजार विदेशी स्त्री, पुरुष और बच्चे तत्काल शिमला बैंक (अब ग्रेण्ड होटल) के अहाते में पनाहगुज़ीन थे जो बाद में सुरक्षा की दृष्टि से धामी, कोटी, बलसन और बघाट रियासतों की शरण में ले जाए गए। इस घटना को अंग्रेज़ी प्रिंट मीडिया ने शिमला आतंक और नरसंहार की संज्ञा दी।

सामंती हिन्दुस्तानी फौजी टुकड़ियों में मई 1857 में बलवे का डंका बजा दिया था। इससे घबराकर ब्रिटिश फौजी अफसरों की रहनुमाई में उपद्रवग्रस्त छावनी क्षेत्रों में विदेशी फौज भेजी गयी। पंजाब मुख्य आयुक्त ने रावलपिण्डी से यह आदेश किया था कि शिमला हिल्ज़ में रह रहे वृद्ध, बीमार और शारीरिक रूप से कमज़ोर अंग्रेज़ लोगों को महफूज़ जगह पर रखा जाए। बुशहर के राजा ने 15000 रुपये का वार्षिक नज़राना देना भी बंद कर दिया था।

1857 का हिमाचल में क्रियान्वित किया गया विप्लव कोई छुटपुट घटना नहीं थी, वह था एक सुनियोजित और सोचा-समझा विद्रोह जिसका नेतृत्व किया हिमाचल के एक स्थायी निवासी रामप्रसाद बैरागी ने। वह एक गोपनीय संस्था थी जिसने यथाशक्ति क्रांति के अभियान में अपना योगदान दिया। अंग्रेज़ों ने श्री बैरागी को अम्बाला में मृत्युदण्ड दे दिया था।

नालागढ़, सिरमौर, कांगड़ा, कुल्लू- लाहौलद्व मण्डी-सुकेत में ऐसी गतिविधियां नोटिस की गयीं। नालागढ़ के क्रांतिकारी संचालन में बघाट और कहलूर (बिलासपुर) के सामंतों ने फौजी इमदाद दी थी। पंजाब के क्रांतिकारियों की मदद से नालागढ़ के स्थानीय ज़मींदारों ने मलावण के किले से ले जाया जाने वाला असला अपने मिशन को चलाने के लिए लूट लिया था–जो हिमाचल के इतिहास में एक गौरवमयी घटना थी। सिरमौर में हिन्दू भावना से भरे गोरखा सिपाहियों ने विद्रोह किया जिसे उस समय रियासती सरकार ने दबा दिया था। शायद वह यह नहीं चाहती थी कि अपने राज्य की बरबूदी के लिए वह इतने बड़े विदेशी साम्राज्य से टक्कर ले। तत्कालीन राजा को इसके लिए उस समय अंग्रेज़ों द्वारा सम्मान भी दिया गया था।

कांगड़ा में राजा प्रताप चन्द ने अपने प्रजाजनों की मदद से विद्रोह करने की हिम्मत दिखायी थी। उस समय ऊना से यह सूचना पहुंची थी कि सरकार के फौजियों ने ऊना में विद्रोह दबाने के लिए वहां के और उनको और उनकी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाया। अंग्रेज़ों ने उस समय कांगड़ा के वृहद् दुर्ग में काफ़ी असला जमा किया था और मुख्यालय को भी धर्मशाला से वहीं बदल दिया गया था। इस घटना ने पूरे कांगड़ा परिक्षेत्र में

अंग्रेजी राज के समय में हम आधुनिक हिमाचल को दो हिस्सों में देख सकते हैं– शिमला हिल्ज़ का पूर्वोत्तरी हिस्सा तथा तत्कालीन पंजाब का पश्चिमोत्तरी भाग। पूर्व में महासू, सिरमौर, चम्बा, बिलासपुर, मण्डी तथा निम्न शिवालिक पट्टी के इलाके और पश्चिम में कांगड़ा, ऊना, कुल्लू और लाहौल स्पीति के निम्न एवं मध्यवर्ती हिमालय के क्षेत्र। इन दोनों इलाकों में छोटी-छोटी सामन्तशाहियां थीं। कुछ राणा शाहियां तो कुछ ठकुराइयां। मध्य और उत्तर मध्यकाल में विभिन्न भारतीय राजवंशों ने भी यहां अपनी रियासतें बनायीं।

तहलका मचा दिया। अंग्रेज़ों ने जब यह देखा कि जसवां, गुलेर, हरिपुर, सुजानपुर, नदौन, कांगड़ा, धर्मशाला, नूरपुर, पठानकोट और ऊना के लोग आज़ादी के शक्ति-प्रदर्शन अभियान में शामिल होने के लिए व्यग्र हैं तो उन्होंने एकाएक अपने प्रशासन को भी सतर्क कर दिया। पंजाब के न्यायिक आयुक्त रोबर्ट मिण्टगुभरी ने उस समय इलाके में फकीरों, साधुओं और भीखमंगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था। जिलाधीश ने उसके आदेश से चौथी देसी पदाति सेना का निशस्त्रीकरण कर दिया था। जेहलम और सियालकोट में तैनात अपनी सेनाओं के ज़रिए अंग्रेज़ी हुकमरानों ने कांगड़ा विद्रोह को दबा दिया था। कांगड़ा में क्रांतिकारियों से हुई भिड़न्तों में ग्यारह शहीदों को फांसी पर लटका दिया तथा 200 को बंदी बना लिया गया।

कुल्लू में युवराज प्रताप सिंह ने क्रांति की कमान संभाली थी। उन्होंने पूरे सराज क्षेत्र की यात्रा की और लोगों को स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रेरणा दी। उसने अपनी पत्नी के भाई मियां बीरसिंह की मदद से न सिर्फ ग्रामीण युवाओं की एक फौज तैयार थी बल्कि उनके लिए बारूद, अस्त्र-शस्त्र आदि का प्रबन्ध भी किया तीन अगस्त 1987 को प्रतापसिंह और उसके कुछ सहयोगियों को पकड़कर भागसू (धर्मशाला) में कैद कर लिया और राजद्रोह का मुकद्दमा चला कर फांसी पर लटका दिया गया। रानी की जागीर छीन ली गयी और पेंशन भी बंद कर दी गयी।

क्रांति की दृष्टि से चम्बा, मण्डी और सुकेत कद्रतन तटस्थ ही बने रहे। जहां तक चम्बा का प्रश्न है भौगोलिक दृष्टि से यह एक अलग थलग अंतरिम घाटी क्षेत्र था और अंग्रेज़ों के पुख्ता सुरक्षा इन्तज़ाम के कारण महज़ जेहलम और जालन्धर की छावनियों से आए फौजी ही क्रांति की गतिविधियों की लपेट में आकर बंदी बनाए गये थे। मण्डी में उस समय कोई पदस्थ राजा नहीं था, अत: रियासत अंग्रेज़ों द्वारा नियुक्त किये गये प्रशासक द्वारा ही चलाई जा रही थी अत: अवरोध का कोई प्रश्न नहीं उठता। सुकेत में भी राजा उग्रसेन, टिक्का रुद्रसेन और वज़ीर नरोत्तम के बीच अंदरूनी खींचतान के कारण, वहां नागरिक युद्ध की स्थिति बनी हुई थी।

अठारह सौ सत्तावन का विप्लव यद्यपि अपने समापन पर पूरी तरह एक असफल अभियान सिद्ध हुआ था फिर भी पहाड़ में गौरांग व्यवस्था को उसने एक करारी चोट भी पहुंचायी थी, इसमें कोई संदेह नहीं। एकाएक ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार से वह एक सीधे तौर पर इंगलैण्ड की महारानी की एक प्रतिनिधि सरकार बन गयी थी जिसका कर्ताधर्ता था ब्रिटिश साम्राज्य के मूल शासक द्वारा नियुक्त वाइसराय। हिमाचल में सामंती ढांचे को स्वशासन का अवसर दिया गया जबकि उनकी निगरानी के लिए दोनों पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अगल से अधीक्षक सहित क्रमश: शिमला और कांगड़ा हिल्ज़ के लिए आयुक्त और उपायुक्त भी नियुक्त किए गए थे। इसके अतिरिक्त अब छोटी ठकुराइयों को भी जुब्बल, क्योंथल और बुशहर जेसी बड़ी रियासतों के तहत रखा गया था। महारानी विक्टोरिया यद्यपि दोषी सामंतों को मुआफी दे दी थी फिर भी पहाड़ों के मुख्य कमिश्नर ने कुछेक को सज़ा भी सुनायी।

हिमाचल की रियासती प्रजा की ओर से अपने अपने परिक्षेत्र में 1857 के गदर के बाद जो आंदोलन चलाए गए उनमें बुशहर की दुहम जद्दोजहद, राजाओं के प्रजापीड़न, भ्रष्टाचार और आतंक के खिलाफ किसानों का सुकेत आंदोलन, मण्डी में वजीर और राजपुरोहित तथा उसके बेटे का निर्वासन, नालागढ़ के राजा के खिलाफ करों के मामले में स्थानीय लोगों का प्रदर्शन तथा बिलासपुर के लोगों का झुग्गा सत्याग्रह इस बात का पूर्वाभास देते हैं कि हिमाचल में सामंती नृशंसता के विरुद्ध भी आम आदमी का दृष्टिकोण विप्लवोत्तर समय में बनने लगा था।

कांग्रेस, जिसमें सभी राजनीतिक विचारधारा के लोग शामिल थे, शिमला में ही पहली बार अपने मूल रूप में वुजूद में आयी। इसके जन्मदाता थे एक सम्भ्रांत अंग्रेज़ ए.ओ. ह्यूम जिन्होंने एक ऐसी संस्था की परिकल्पना की थी जो समन्वयात्मक ढंग से इस देश में आवश्यक सामाजिक सुधारों और लोक कल्याण के कार्यों को फ़रोग दे सके। इस विशुद्ध राष्ट्रीय संगठन का स्थान था शिमला में जाखू स्थित रॉथनी कैस्सल जो बाद में शीशेवाली कोठी के नाम से भी जानी जाती रही। ह्यूम महाशय ने देश के सभी राष्ट्रभक्तों व विवेकशील नागरिकों को इस संगठन के छत्र तले जमा होने का आह्वान किया और 1888 में हिमाचल की राजधानी शिमला में ही अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अस्मिता को परिरक्षित रखने के लिए स्थापना हुई थी। यह एक ऐसी संस्था थी जो शासक और शासितों के बीच मधुर संवाद स्थापित कर देश की जनता के लिए एक आदर्श प्रजातंत्र व्यवस्था को स्थापित कर भारत (उस समय हिन्दुस्तान) को एक स्वतंत्र परिसंघ के रूप में देखना चाहती थी। उस समय के शासन की आशंका और सतर्कता के बावजूद वायसराय डफ्रिन ने संस्था के अध्यक्ष को इसकी शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रव्यापी देशप्रेम की यह एक शुरुआत थी क्योंकि इतिहास का आदमी जिसकी संस्कृति इतनी समृद्ध, सनातन और प्राचीन थी अब समय की वह मार और सामूहिक नियति के वे प्रहार बर्दाश्त नहीं कर सकता था जो उसने गत हजार एक साल में सहे थे। भारत के अन्य भागों की तरह हिमाचल में भी एक नयी और आशामय सदी का आगमन हुआ था जो **जीवेम शरदः शतम्** की अनुगूंज से ध्वनित हो रही थी।

मंडी में 1912 में राजा भवानी सेन की मृत्यु के बाद रानी ललिता कुमारी ने अपने क्षरित होते राज्य की बागडोर संभाली और एकाएक क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो गयीं। रानी ने लाला लाजपत राय के संगठन के लिए धन इकट्ठा किया। इसी बीच 1913 में एक अध्यापक हरदेव सिंह ने गदर पार्टी की सदस्यता ग्रहण की और इसी सिलसिले में अमेरिका, जापान और शंघाई भी गए जहां गदर पार्टी के लोग सतर्क और संगठित होकर कार्य कर रहे थे। मंडी और सुकेत में प्रचार साहित्य के माध्यम से लोगों को प्रेरणा दी गयी। इस जद्दोजहद में मियां जवाहर सिंह, सिद्ध खरारा, बद्रीनाथ, शरधा राम, ज्वालासिंह, दिलीप सिंह और लौंकू राम जैसे हिमाचली देशभक्तों ने भाग लिया जिससे स्थानीय जनता में भी देशप्रेम की एक लहर सी उठ गयी। मण्डी क्षेत्र के क्रांतिकारी रासबिहारी बोस, सुरजन सिंह और पंजाब के निधान सिंह से प्रभावित हुए थे और उन्होंने नचाला के पास अवस्थित सरकारी राजकोष भी लूटा था जिसके लिए उन सभी को ब्रिटिश पुलिस द्वारा बंदी बना लिया गया था। इसी क्षेत्र के एक और क्रांतिकारी थे हृदयराम जिन्होंने गदर पार्टी के क्रांतिकारी डॉ. मथुरा सिंह, करतार सिंह तथा महाराष्ट्र के पिंगले के साथ क्रांति की मशाल जलाई। क्रातिकारी हृदयराम को यद्यपि बाद में सरला देवी की अपील पर कालापानी भेज दिया था–अन्य को अंग्रेज़ सरकार द्वारा फांसी दे दी गयी थी। अन्य स्वतंत्रता सेनानियों में 1915 में ऊना के ऋषिकेश लट्ठ, बाबा लक्ष्मण दास और उनकी पत्नी दुर्गाबाई ने भाग लिया। कांगड़ा (हमीरपुर) में बाबा कांशी राम जिन्हें पहाड़ी गांधी के नाम से जाना जाता है, 1916 में लाहौर में अपने अध्ययन काल के दौरान लाला हरदयाल और अजीत सिंह से प्रभावित होकर आज़ादी की लड़ाई में कूद गए थे। कांगड़ा में पंचम चन्द कटोच, सर्वमित्र, कृपाल सिंह, सिद्धूराम और थोलो राम ने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। यह वही समय था जब नदौन के निवासी प्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल ने लाहौर में क्रांतिकारी संघर्ष में युवा क्रांतिकारियों का साथ दिया था। वे नौजवान भारत सभा और बाद में सरदार भगत सिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद द्वारा संगठित हिन्दुस्तान सोशलिस्ट डैमोक्रेटिक आर्मी के सदस्य भी रहे। तत्कालीन ब्रिटिश वायसराय की रेलगाड़ी को बम से उड़ाने की साज़िश में यशपाल के साथ हमीरपुर के एक अन्य युवा क्रांतिकारी इन्दरपाल भी थे। हिमाचल के एकाधिक स्वतंत्रता सेनानी लाहौर षड्यंत्र मामले में बंदी बना लिए गए थे। इनमें मंडी के जे.पी. बागी भी एक नाम है जिन्हें डकैती, हत्या और असला रखने के आरोप में छह वर्ष की कैद दी गयी थी। 1927 में कांगड़ा में सुजानपुर ताल के पास स्थानीय जिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं की सहायता से एक राजनीतिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया था जिसकी अध्यक्षता सरोजिनी नायडू ने की। इस सम्मेलन में मेलाराम, लाहौर से कुन्दनलाल, सरला देवी, दुनी चन्द इत्यादि ने भाग लिया। इस अवसर पर स्थानीय नेता बाबा कांशी राम, ठा. हज़ारा सिंह और गोपाल सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अधिवेशन में श्रीमती सरोजिनी नायडू ने बाबा कांशी राम को बुलबुल-ए-हिन्द के खिलाब से नवाजा था। 1928 में भारत आए साइमन कमीशन की कांगड़ा, शिमला और ऊना के लोगों ने ज़ोरदार मुखालफत की थी जिसमें 'हिन्दुस्तान हमारा है' और 'क्या रक्खा है अंग्रेज़ो यहां जो तुम्हारा है' जैसे प्रशासकीय कार्यालयों के सामने नारे लगाए गए।

शिमला नगर में 1930 के दौरान महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए नागरिक अवज्ञा आंदोलन का काफी प्रभाव देखा गया। यह आंदोलन करीब एक सप्ताह तक चला जिसमें अपने सहयोगियों सहित श्याम लाल खन्ना, दीनानाथ आंधी, प्रेम सागर, श्याम लाल, लाल चन्द, पूर्ण चन्द, जयराम पेण्टर और रतन चन्द जैसे सम्भ्रांत स्थानीय नागरिकों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

इनके अलावा सिरमौर में चौधरी शेर जंग, बिलासपुर में दौलत राम सांख्यान, कांगड़ा में लाला बंशी राम और उनके सहयोगियों ने सविनय नागरिक अवज्ञा आंदोलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया था जिससे यह नज़र आता था कि देश में उपनिवेशी सरकार के दिन अब समाप्त होने वाले हैं। इन प्रमुख क्षेत्रों के बरक्स मंडी-सुकेत बाघल, बघाट, कुनिहार, क्योंथल, बुशहर, जुब्बल, सिरमौर, नालागढ़ और अन्य कुछ एक ठकुराइयों में भी तृणमूल स्तर पर विरोध और प्रदर्शन हुए।

प्रदेश में सुनियोजित ढंग से संघर्ष की शुरुआत उस समय हुई जब समाज के तत्कालीन अग्रणी नेताओं ने प्रजामण्डल की नींव रख कर रियासत की सामंतशाही, ठकुराई और अंग्रेज़ों से उनकी मिलीभगत के खिलाफ मुक्ति के लिए एक अभियान आरम्भ किया गया था। राज्य स्तर के इस संगठन को कार्यान्वित करने के लिए टिहरी से देव सुमन बुशहर से पं. पद्मदेव, जुब्बल से भागमल सोहटा, भज्जी से भास्करानंद, बाघल से हीरा सिंह पाल, ठियोग से सूरत राम प्रकाश, मधान से देवीदास

राष्ट्रव्यापी देशप्रेम की यह एक शुरुआत थी क्योंकि इतिहास का आदमी जिसकी संस्कृति इतनी समृद्ध, सनातन और प्राचीन थी अब समय की वह मार और सामूहिक नियति के वे प्रहार बर्दाश्त नहीं कर सकता था जो उसने गत हजार एक साल में सहे थे। भारत के अन्य भागों की तरह हिमाचल में भी एक नयी और आशामय सदी का आगमन हुआ था जो जीवेम शरदः शतम् की अनुगूंज से ध्वनित हो रही थी।

मुसाफिर, क्योंथल से केवल राम, बिलासपुर से सदारीम चंदेल इत्यादि आगे आए। लाहौर से आयुर्वेद में शिक्षित होकर लौटे पद्मदेव ने जुब्बल के एक सम्भ्रान्त ज़मींदार परिवार के सदस्य भागमल सोहटा के साथ मिलकर प्रदेश स्तर के प्रजामण्डल का गठन 1939 किया।

हिमाचल में स्वतंत्रता संग्राम का पहला जेहादी कार्यक्रम शिमला के समीप स्थित रियासत धामी से हुआ। 1937 में यहां प्रजामण्डल से पूर्व धामी प्रेम प्रचारिणी सभा जनहित में कार्य कर रही थी। यहां के ज्यादातर लोग शिमला में सेवारत थे अत: वे राजा-राणाओं के कुशासन और प्रजादमन के प्रति ज्यादा सजग थे। प्रेम प्रचारिणी सभा को जब दो वर्ष बाद प्रजामण्डल के तहत लाया गया–प्रजामण्डल के नेताओं का एक शिष्टमण्डल के मण्डल महामंत्री भागमल सोहटा के नेतृत्व में धामी के राणा से मिलने गया ताकि रियासती प्रजा की तकलीफों का परिहार हो सके। जब यह शिष्टमण्डल अभी घनाहट्टी ही पहुंचा था पुलिस द्वारा गोलीबारी शुरू हो गयी। इस प्रदर्शन में दो आदमी मारे गए तथा लगभग 90 प्रदर्शनकारी हताहत हुए। इस वारदात की सूचना महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू तक भी पहुंची जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर इसका नोटिस लिया। धामी गोली काण्ड के बाद स्थानीय मण्डल के अध्यक्ष पं. सीता राम को बगावत के जुर्म में बंदी बना लिया गया और धामी त्रासदी पर उनकी 'चेतावनी' नाम की किताब को ज़ब्त कर लिया गया था। शिमला में धामी सत्याग्रह लगभग दो महीने तक चला। राणा के खिलाफ धामी की प्रजा रुष्ट थी। धामी विद्रोह को ब्रिटिश सेना द्वारा दबा दिया गया था जिसकी सब ओर से भर्त्सना हुई। गांधी जी ने इस घटना का खण्डन करते हुए सरकार को यह चेतावनी दी कि वह अपने प्रांतीय प्रशासकों की शक्तियों को काबू में रखे और कानून का प्रयोग मर्यादित ढंग से हो।

प्रजामण्डल की लहर प्रदेश के अन्य रियासती इलाकों में भी पहुंच रही थी। सुदूर चम्बा में धामी की लीक पर ही प्रजा सुरक्षा लीग कार्य कर रही थी। इस संगठन के मंत्री एम.ए. अहमद ने प्रिंट मीडिया की मदद से चम्बा के शासक के खिलाफ उसकी ज्यादतियों के बारे में अपने आलेखों में रहस्योद्घाटन किया था। चम्बा शहर, चुराह, भटियात, बनीखेत और डलहौजी में राजा के खिलाफ़ बड़े-बड़े प्रदर्शन हुए। चर्चित राज्य में प्रजामण्डल के अंतर्गत ध्यान सिंह पुरी, दौलत राम गुप्ता, मुन्शी गुलाम नबी, लाल सौदागर मल, ठाकुर चत्तर सिंह, सत्य प्रकाश भण्डारी, विद्याधर, विद्यासागर, भगत सिंह पठानिया, बलवन्त सिंह आदि नेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। चम्बा से आने वाली प्रेस रिपोर्टें उस समय प्रकाशित होने वाले ट्रिब्यून, केसरी, नैशनल इन्कलाब, प्रताप, सनराइज़, हिन्दुस्तान टाइम्स, डेली हेराल्ड और द ट्रूथ में लगातार छपती रही थीं।

कांगड़ा भी स्वतंत्रता की गतिविधियों में पीछे नहीं रहा। वह दूसरे विश्व युद्ध का समय था जिससे जहां एक ओर सेना भरती के मामले में कांगड़ा की मानव शक्ति काफ़ी प्रभावित रही फिर भी दूसरी ओर आज़ादी की जंग जोरशोर से जारी रही थी। इसी समय सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फौज में भी हिमाचल के अनेक राष्ट्रभक्त जवान सेना में भरती हुए थे। जून 1944 में बैजनाथ, गरली और लदरौर में कांग्रेसी नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को फ़रोग दिया था। कांगड़ा में पार्टी की साठ और हमीरपुर में चालीस समितियां गठित की थीं जिनके तहत 1939 में ही संघर्ष आरम्भ कर दिया गया। इस मुहिम की अगुवाई के करण कांग्रेसी नेता पं. भगत राम, ठाकुर हजारा सिंह और चत्तर सिंह के खिलाफ अंग्रेजी सरकार ने मामले दर्ज करके दो साल की कैद की सज़ा सुना दी। मंडी में प्रजामण्डल के अंतर्गत स्वामी पूर्णानन्द के निर्देशन में गौरी प्रसाद ने संगठन का अध्यक्ष बनकर सामन्तवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया था। ऊना, अम्ब, गगरेट और देहरा में गांधी जी की शिष्या और ब्रिटिश एडमिरल की बेटी मीरा बेन ने लोगों को महात्मा के राष्ट्रीय कार्यक्रमों से बावस्ता किया और देश के अन्य स्थानों की तरह सामुदायिक स्तर पर हिमाचल के मैदानों से लगते इन इलाकों में राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ावा दिया। हिमाचल उस समय बाहर की दुनिया से कटा हुआ था। यहां संचार और परिवहन के साधन भी नगण्य थे जिसकी वजह से लोगों पर हुए अत्याचारों की सूचना देश के नाभिकेन्द्रों तक बहुत देर बाद पहुंच पाई। दूसरी लड़ाई के बाद यद्यपि सामंतशाही के खिलाफ पर्याप्त शक्ति संचय हो गया था जिससे हिमालय के इन पहाड़ों को मुक्त करने में आसानी हुई। राज्य में लोगों के प्रजातांत्रिक अधिकारों को प्राप्त करने की दिशा में प्रजामण्डल संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिमला, सोलन, मण्डी, बिलासपुर, सिरमौर, चम्बा, नालागढ़, मंडी आदि के लोगों को इस कार्य में अहम योगदान था।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन देशभर में जोरों पर था। इसी सिलसिले में राजनीतिक अभियान के लिए पं. जवाहर लाल नेहरू भी कुल्लू मनाली आए। साथ में थीं उनकी बेटी इंदिरा गांधी, निकोलाई रोरिख के पुत्र चित्रकार स्वेतोस्लाव रोरिख, बाबू जगजीवन राम और फिरोज़ गांधी। नेहरू ने अपने उक्त प्रवास के दौरान उस क्षेत्र में अनेक जनसभाएं सम्बोधित कीं और फिर कांगड़ा की ओर चले गए।

हिमाचल के राजनीतिक इतिहास में सिरमौर का पझौता आंदोलन किसानों का आंदोलन था जिसमें लछमी सिंह, गुलाब सिंह , अत्तरसिंह (टपरोली), चूंचूं मियां (जड़ोल), मेहर सिंह (पेन कुफ्फर), मदन सिंह (धामला), वैद्य सूरत सिंह (कटोगड़ा), जालम सिंह (भगोट), महीराम (लिऊ) और पद्मा राम ने सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भाग लिया। यह आंदोलन किसान सभा के अंतर्गत सुनियोजित ढंग से चलाया गया था ताकि रियासती सरकार के अधिकारियों की ज्यादतियों से किसान समुदाय के हितों की रक्षा हो सके। उनकी मांगों में था जनता द्वारा मंत्रिपरिषद चयन, रीत कर और बाल विवाह पर प्रतिबंध, अनिवार्य सैनिक भर्ती की वर्जना, दूसरे विश्वयुद्ध के लिए ब्रिटिश सरकार को सहायता न देना, भ्रष्टाचारी और गुस्ताख किस्म के अफसरों का तबादला, ग्राम सभा एवं पंचायतों की स्थापना, जबरन बेगार प्रथा का अन्त, नये स्कूलों, डाकघरों एवं अस्पतालों का सृजन और गिरि नदी पर पुल का निर्माण। सिरमौर के राजा को विरोधी तत्वों ने वर्गला दिया था कि पझौते के बागी आंदोलनकारी राजशाही का चरित्र हनन कर रहे हैं शासन द्वारा मार्शल लॉ लगा दिया गया और परिणामस्वरूप आठ लोगों को दो वर्ष का कारावास तथा 25 को हिरासत में ले लिया गया था।

जून 1945 के दौरान हिमाचल की राजधानी शिमला में राष्ट्रीय नेताओं की लॉर्ड वेवेल द्वारा एक बहुदलीय बैठक बुलाई गई जिसका उद्देश्य था हिन्दू-मुस्लिम कौमों के बीच सद्भावना स्थापित करना। इस बैठक में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सी. राजगोपालाचारी, ख़ान अब्दुल गफ्फ़ार ख़ान, आचार्य कृपलानी, गोविन्द वल्लभ पन्त, डॉ. पट्टाभिसीतारामैया, शंकर राव देव, जय राम दास, दौलत राम, रवि शंकर शुक्ल, अरुणा असफ अली, मीराबेन और मणिबेन पटेल उपस्थित थे। इनके अलावा उक्त विषय पर परिचर्चा व बातचीत के लिए मोहम्मद अली जिन्ना, लियाकत अली ख़ान, शाहनवाज़ ख़ान जैसे मुस्लिम नेता और मास्टर तारा सिंह जैसे सिख नेता भी शिमला आए थे। यह स्थानीय राष्ट्रीय नेताओं के लिए एक प्रेरणाप्रद अवसर था। इस मौके पर प्रजामण्डल के प्रादेशिक नेता जैसे पद्मदेव, भागमल सोहटा, ज्ञान चंद टूटू, सदाराम चंदेल,, पं. सीताराम, भास्करानन्द आदि पार्टी के बड़े नेताओं से अपना राब्ता कायम कर सके। (शेष पृष्ठ 11 पर)

भारत मां को कोटि-कोटि नमन

✍ सुरेश चन्द बटोही

धन्यधरा, धन्यगगन,
मातृभूमि को मेरा नमन,
इस धरा की माटी में,
खिलता कोटिश तन-मन।

गगन अमृतरस बरसाता,
सिरहन प्राणों में जगाता,
पिता सम पोषण देता,
नित नए रूप संजोता।

विंध्य, हिमालय शिखरों पर,
विराट पुरुष इतराता,
सूर्यरश्मि रूपायन से,
नित नव काव्य रचाता।

अथाह सागर की लोल तरंगों में,
आपा अपना जैसे कोई खोता,
गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा,
कावेरी, सिन्धु भारत कहलाता।
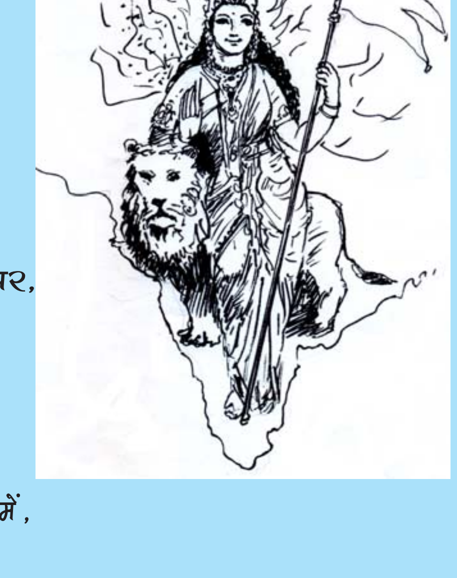
धन्य भारत, धन्य जीवन,
विविध धर्म, जाति, भाषामिलन,
नानावृक्षों के इस उपवन में,
पल्लवित होता जन-जन,
ऐसी वात्सल्यमयी भारत मां को,
भारत पुत्रों का कोटि-कोटि नमन।